[हमारे अतीत भाग -3] 3 ग्रामीण क्षेत्र पर शासन चलाना

1. निम्नलिखित के जोड़े बनाएँ

रैयत - ग्राम-समूह

महाल - किसान

निज - रैयतों की जमीन पर खेती

रेवती - बागान मालिकों की अपनी जमीन पर खेती

2. रिक्त स्थान भरें

क. यूरोप में वोड उत्पादकों को **नील** से अपनी आमदनी में गिरावट का खतरा दिखाई देता था।

ख. अठारहवीं सदी के आखिर में ब्रिटेन में नील की माँग **औद्योगीकरण** के कारण बढ़ने लगी।

ग. **कृत्रिम रंग** की खोज से नील की अन्तर्राष्ट्रीय माँग पर बुरा असर पड़ा।

प. चंपारण आंदोलन **नील बागान मालिकों** के खिलाफ

3. स्थायी बंदोबस्त के मुख्य पहलुओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर: लार्ड कॉर्नवॉलिस ने 1793 में स्थायी बंदोबस्त लागू किया, इसमें-

1. राजाओं और तालुकदारों को जमींदारों के रूप में मान्यता दी गई।

2. जमीदारों को किसानों से राजस्व इकट्ठा कर कम्पनी के पास जमा कराने का काम दिया गया।

3. जमीनों की राजस्व राशि स्थायी रूप से कर दी गयी। 4. किसानों से भूमि संबंधी अधिकार छीन लिए गए, जिससे किसान जमींदारों की दया पर निर्भर हो गए। ये अपनी ही जमीन पर मजदूरों की तरह काम करने लगे।

4.महालवारी व्यवस्था स्थायी बंदोबस्त के मुकाबले कैसेअलग थी?

उत्तर: महालवारी व्यवस्था और स्थायी बंदोबस्त में भिन्नता महालवारी व्यवस्था बंगाल प्रेजिडेंसी के उत्तर पश्चिमी प्रान्तों के लिए होल्ट मैकेंजी नामक अंग्रेज ने एक नयी व्यवस्था 1822 में तैयार की गयी। इस व्यवस्था के अनुसार

1. गाँव के एक-एक खेत के अनुमानित राजस्व को जोड़कर हर गाँव या ग्राम समूह (महाल) से वसूल होने वाले राजस्व का हिसाब लगाया गया।

2. इस राजस्व को स्थायी रूप से निश्चित नहीं किया गया, बल्कि उसमें समय-समय पर संशोधन का प्रावधान किया गया।

3. राजस्व इकट्ठा करने तथा कम्पनी के पास जमा कराने का काम जमींदार के स्थान पर गाँव के मुखिया को दिया गया।

स्थायी बंदोबस्त व्यवस्था लॉर्ड कॉर्नवॉलिस ने 1793 में यह व्यवस्था लागू की।

1. राजाओं और तालुकदारों को जमींदारों के रूप मान्यता दी गयी। खेत के हिसाब से राजस्व निश्चित नहीं किया गया।

2. जमीनों की राजस्व राशि स्थायी रूप से निश्चित कर दी गयी।

3. राजस्व इकट्ठा करने तथा कम्पनी के पास जमा कराने का काम जमींदार को दिया गया।

5 राजस्व निर्धारण की नयी मुनरो व्यवस्था के कारणपैदा हुई दो समस्याएँ बताइए।

उत्तर: मुनरो व्यवस्था के कारण पैदा समस्याएँ

1. जमीन से होने वाली आय को बढ़ाने चक्कर में राजस्व अधिकारियों ने ज्यादा राजस्व तय कर दिया। किसान राजस्व नहीं चुका पा रहे थे तथा गाँव छोड़कर भाग रहे थे।

2. मुनरो व्यवस्था से अफसरों को उम्मीद थी कि यह नई व्यवस्था किसानों को संपन्न उद्यमशील किसान बना देगी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

6. रैयत नील की खेती से क्यों कतरा रहे थे

उत्तर: रैयतों का नील की खेती से कतराने का कारण

1. किसानों को नील की खेती करने के लिए अग्रिम ऋण दिया जाता था, परन्तु फसल कटने पर कम कीमत पर फसल बेचने को मजबूर किया जाता था जिससे वे अपना ऋण नहीं चुका पाते थे और कभी न

खत्म होने वाले कर्ज के चक्र में फँस जाते थे।

2. बागान मालिक चाहते थे कि किसान अपने सबसे उपजाऊ खेतों पर नील की खेती करें।

3. किसान को नील की खेती करने के लिए अतिरिक्त मेहनत तथा समय की आवश्यकता होती थी। जिस

कारण किसान अपनी अन्य फसलों के लिए समय नहीं दे पाता था।

7. किन परिस्थितियों में बंगाल में नील का उत्पादन धराशायी हो गया

उत्तर: बंगाल में नील के उत्पादन के धराशायी होने की परिस्थितियाँ

1. मार्च 1859 में बंगाल के हजारों रैयतों ने नील की खेती करने से मना कर दिया।

2. रैयतों ने निर्णय लिया कि न तो वे नील की खेती के लिए कर्ज लेंगे और न ही बागान मालिकों के लाठीचारी गुंडों से हरेंगे।

3. कम्पनी द्वारा किसानों को शांत करने और विस्फोटक स्थितियों को नियंत्रित करने की कोशिश को किसानों ने अपने विद्रोह का समर्थन माना।

4.नील उत्पादन व्यवस्था की जाँच करने के लिए बनाए गए नीले आयोग ने भी बागान मालिकों को जोर-जबर्दस्ती करने का दोषी माना और आयोग ने किसानों को सलाह दी वे वर्तमान अनुबंधों को पूरा करें तथा आगे से वे चाहें तो नील की खेती को बंद कर सकते हैं। इस प्रकार बंगाल में नील का उत्पादन धराशायी हो गया।

Notes prepared by Lekhram Chaudhary & Tejpal Sharma [Team GUPS 7DPN – Bhadra]

डाउनलोड करें दुसरे विषयों के नोट्स पीडीऍफ़ में Click Here